SHIV OM SAI PRAKASHAN

मृत्यु से जीवन को सार्थकता देने पर आधारित उपन्यास "काशी मरणान्मुक्ति "
का विमोचन सुश्री इन्दु जैन द्वारा

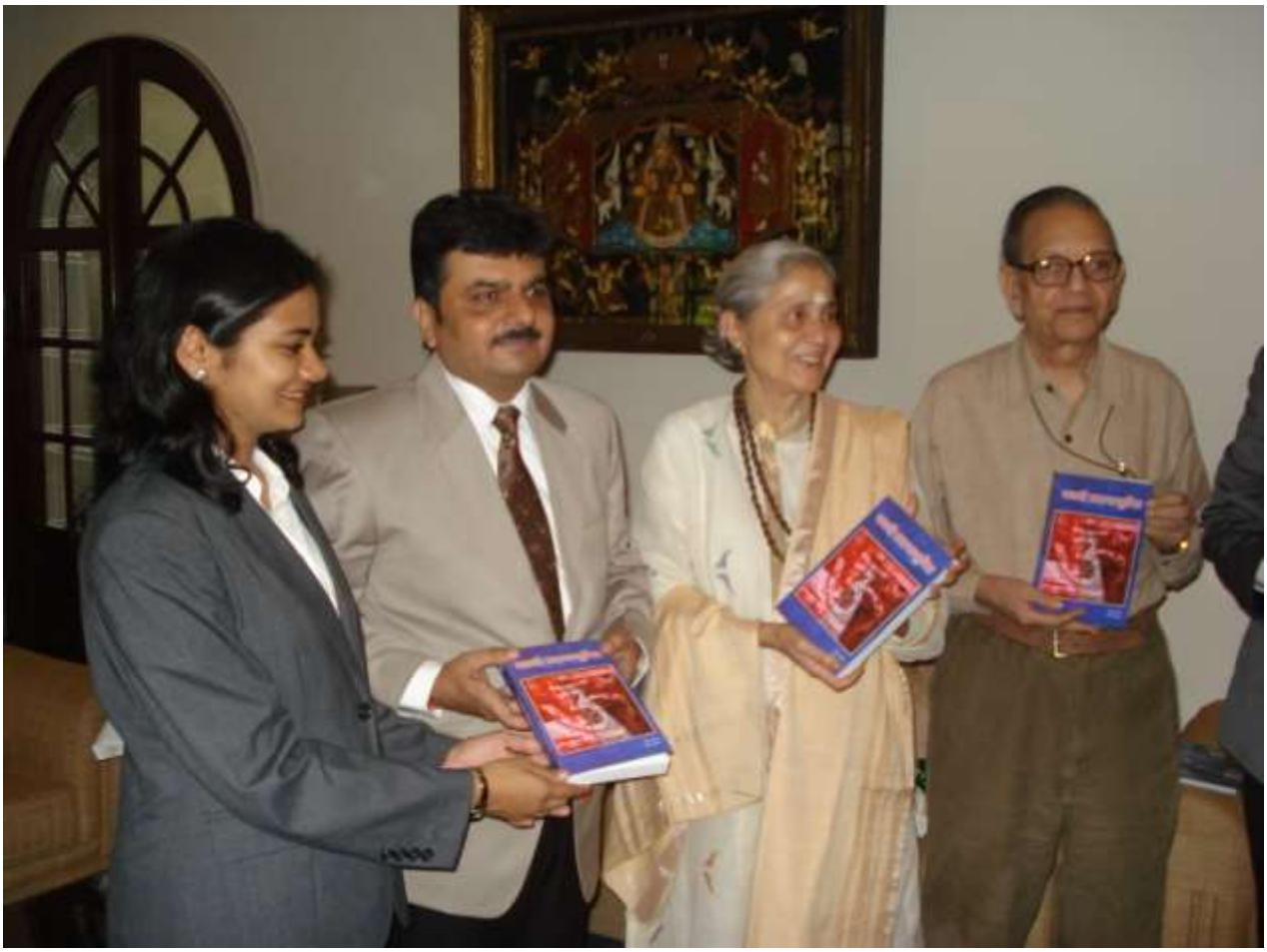

नई दिल्ली, शनिवार १८ सितम्बर २०१० को टाइम्स ग्रुप की अध्यक्ष सुश्री इन्दु जैन ने लेखक श्री मनोज ठक्कर एवं सुश्री रश्मि छाजेड़ द्वारा लिखित उपन्यास " काशी मरणान्मुक्ति " का विमोचन अपने निवास स्थान पर एक सादगीपूर्ण परन्तु अत्यंत ही आत्मीय एवं पारिवारिक वातावरण में किया| साथ ही में ज्ञान पीठ पुरस्कृत कुंवर नारायणजी के होने से वातावरण और प्रफुल्लित हो उठा|

"सृष्टि में माया के अनेक आवरणों के पीछे वह परम ज्योति प्रतिष्ठित हैं जिसके दर्शन स्वबोध के क्षण करता मानव, बुद्ध हो जाता है|"

जो इस सत्य को जानता है, वह यह भी जानता है कि जीवन मात्र सृष्टि कि अनंतता से उसकी सूक्ष्मता की ओर की यात्रा है| मृत्यु, जीवन का अमंगलकारी अंत न होकर, जीवन यात्रा की परम मंगलकारी पूर्णता है| जहाँ मनुष्य निज बोध के गंतव्य को पाता किसी जन्म में स्वयं ईश्वरीय अवतार के पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है|

जीव जो बने, जैसा बने, योग से बने, तो सत्य और किसी भीषण संकट आने पर भी जो काशी से विलग ना होने दे, वही महायोग है| यदि जीव का मरण काशी में होता है, तो वह अमृत अर्थात मुक्त हो जाता है और यही काशी मरणांमुक्ति है|

'पर याद रख मैं तेरा गुरु नहीं' कथन के प्रत्येक अध्याय के अंत में आने से गुरु पाने की तृष्णा, मृग मरीचिका-सी प्रतीत होती है और कथा लेखन की विशिष्टता दर्शाती है| एक सदगुरु ही जीवन नौका को भवसागर के पार लगाता है| यह कथा महामुक्ति की है क्योंकि चैतन्य कभी मरता नहीं, वह न तो जन्म धारण करता है न ही मरण को प्राप्त होता है| यह कथा प्रत्येक पाठक को अर्थशून्यता के पीछे के महाअर्थ तक ले जाने वाले मार्ग की ओर प्रेरित करेगी|

धर्म, ज्ञान, आस्था और संस्कृति से कहीं ऊपर, यह कथा है स्व के अर्थ की| स्व के अर्थ को जानने वाला धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, मोह-वैराग्य के सर्पों से घिरे चंदन के समान ही निर्लिप्त रह कर, अपने अंतःकरण में बसती काशी की यात्रा करता है. उसका हर कदम मात्र आत्मा में प्राणप्रतिष्ठित काशी विश्वनाथ की ओर ही उठता है और अंत में वह सभी आवरणों के पर होता, इस ज्योतिपुंज से एकाकार हो स्वयं मात्र ज्योति बन मुक्त हो जाता है, यही काशी मरणान्मुक्ति है|

सृष्टि की उत्पत्ति हुई प्रणव रूपी नाद से और परमात्मा ने अपने ही प्रपंच के विस्तार में इस नादबिंदु को अपनी अनंतता के स्पर्श से छू भर दिया| इस स्पर्श से उस परमशक्तिमान सृजनकर्ता की सुविशालता और अनंतता सृष्टि रूपी रचना के हर कण में आ समाई| यात्रा-पथ तैयार था, सो अब रचयिता ने अपने परिस्पंद से जन्म दिया इस अनंत के यात्री एवं इस गुह्य रहस्य के खोजी मानव को| शत कोटि वर्षों से यात्रा करती मानव सभ्यता, इस विस्तार से बार-बार चमत्कृत होती रही है और आज भी हो रही है| कण-कण में वास करने वाली अनंतता के ओर-छोर की प्राप्ति को ही अपना परम ध्येय बना दुर्भाग्यशाली मानव ने स्वयं ही सृष्टि की

सूक्ष्मता की ओर अपने नेत्र मूँद लिए और उस परम सत्य के प्रति ही विस्मृत हो गया, जिसे अपने अन्तःकरण में प्राणप्रतिष्ठित कर उसने मानव-जन्म प्राप्त किया था, इसी सत्य का वास्तविक बोध कराती है "काशी मरणान्मुक्ति"|

“कहानी एक ही है और नायक भी एक ही | किंतु एक ही नायक के ये दो रूप - एक जगत में ख्यात, तो दूसरा अनजाना अज्ञात | एक फूलों से उठती सुगंध, तो दूसरा चिता में जलते मुर्दों से उठती दुर्गंध | एक सूर्य से उजला दिन, तो दूसरा चंद्रविहीन अमावस्या की अँधेरी रात | एक विवाह के मंडप में सजी दुलहन की चुनरी का रचयिता, तो दूसरा जीर्ण-शीर्ण मल-मूत्र से भरी मृत काया का दाहकर्ता | एक श्रीविष्णु रूप रामानंद का शिष्य, तो दूसरा श्री शिव रूप गुरु का चेला |

आज हमारे राष्ट्र का युवा जीवन के मूलभूत ज्ञान के स्त्रोत वेद, पुराण और उपनिषदों से वंचित है, इसके कई कारण हैं पर काफी हद तक भाषा की क्लिष्टता और संस्कृत भाषा का प्रचलन भी है| लेखक ने उसी गूढ़ ज्ञान को इतनी सहजता से प्रस्तुत किया है कि आज की पीढ़ी उसका रसस्वादन कर अपने जीवन में वास्तविक परिवर्तन कर सके| यह लेखन शैली की विशिष्टता और दर्शनशास्त्र के गहन अध्ययन पर ही संभव है|

श्री मनोज ठक्कर की पहली पुस्तक "प्राण काव्य- एक अभिव्यक्ति" का विमोचन भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ साहेब ने किया था| श्री ठक्कर ने "प्राण काव्य" की सभी प्रतियाँ केवल उपहार रूप में ही प्रस्तुत की हैं| भारत प्रसिद्ध लेखक डॉ. श्रीलाल शुक्ला, डॉ. काशीनाथ सिंह एवं बाल कवि बैरागी का 'प्राण काव्य' की समीक्षा के लिए एकमत था, "प्राण काव्य" की समीक्षा करना मेरे अधिकार क्षेत्र में नहीं हैं|"

स्वयं जीवन जीकर जीवन तो सीख सकते हैं, दूसरो को सिखा भी सकते हैं और साथ ही मृत्यु से मित्रता भी कर सकते है, परंतु किसी को मृत्यु ऐसे नहीं सिखा सकते, जैसे जीना”, इसी में कहीं छिपा है 'काशी मरणान्मुक्ति' उपन्यास का सार|

जैसे स्वर्णिम सूर्य आभा शीतल जल कणों पर गिर इन्द्रधनुष रूपी विविध रंगों की सुन्दरता एवं अविस्मरणीयता का बोध देती है वैसी ही थी पुस्तक "काशी मरणान्मुक्ति" के विमोचन के कार्यक्रम की झलके|

श्रीमान संपादक महोदय,

_____,

भवदीय,

_____.

_____